



Web: [parmeshwarkaniyam.org](http://parmeshwarkaniyam.org)

## ईश्वर की व्यवस्था: अपेंडिक्स 1: 613 आज्ञाओं का मिथक

**613 आज्ञाओं का मिथक और वे सच्ची आज्ञाएँ जिनका पालन हर ईश्वर के सेवक को करना चाहिए।**

कई बार, जब हम उद्धार के लिए पिता और पुत्र की सभी आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता पर कोई लेख प्रकाशित करते हैं, तो कुछ पाठक नाराज होकर लिखते हैं: **“यदि ऐसा है, तो हमें सभी 613 आज्ञाओं का पालन करना होगा!”** इस तरह की टिप्पणियाँ स्पष्ट करती हैं कि अधिकांश लोग नहीं जानते कि यह 613 आज्ञाओं की रहस्यमय संख्या कहाँ से आई है और यह वास्तव में क्या है, क्योंकि इसे बाइबल में किसी ने कभी नहीं देखा।

इस लेख में, हम प्रश्नोत्तर के प्रारूप में इस मिथक की उत्पत्ति की व्याख्या करेंगे। साथ ही, हम उन सच्ची आज्ञाओं को भी स्पष्ट करेंगे जो पवित्र शास्त्र में ईश्वर द्वारा दी गई हैं और जिनका पालन हर उस व्यक्ति को करना चाहिए जो ईश्वर पिता से डरता है और अपने पापों की क्षमा के लिए उसके पुत्र के पास भेजा जाने की आशा करता है।

**प्रश्न:** प्रसिद्ध 613 आज्ञाएँ क्या हैं?

**उत्तर:** 613 आज्ञाएँ (613 मिल्ज़वोट) 12वीं सदी ईस्वी में रब्बियों द्वारा यहूदी अनुयायियों के लिए बनाई गई थीं। इनके मुख्य लेखक स्पेनिश रब्बी और दार्शनिक मोशे माइमोनाइड्स (1135-1204), जिन्हें **रम्बाम** के नाम से भी जाना जाता है, थे।

**प्रश्न:** क्या वास्तव में शास्त्रों में 613 आज्ञाएँ हैं?

**उत्तर:** नहीं। प्रभु की सच्ची आज्ञाएँ कम हैं और उनका पालन करना सरल है। शैतान ने इस मिथक को प्रेरित किया, जो उसके दीर्घकालिक प्रोजेक्ट का हिस्सा है, ताकि मानव जाति को प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने से रोक सके। यह अदन से ही ऐसा करता आ रहा है।

**प्रश्न:** 613 का यह संख्या कहाँ से आई?

**उत्तर:** यह संख्या रब्बी परंपरा और हिब्रू अंकशास्त्र (न्यूमेरोलॉजी) की अवधारणा से जुड़ी है, जिसमें प्रत्येक अक्षर को एक संख्या दी जाती है। इन परंपराओं में से एक का कहना है कि शब्द “त्सीतीत” (תצי"ט), जिसका अर्थ है **झालर, डोरियाँ, या बुने हुए रेशे** (देखें गिनती 15:37-39), का संख्यात्मक योग 613 होता है, जब उसकी अक्षरों को जोड़ा जाता है।

विशेष रूप से, इन डोरियों को, मिथक के अनुसार, 600 का प्रारंभिक संख्यात्मक मान दिया गया। जब इनमें आठ धागे और पाँच गाँठें जोड़ दी जाती हैं, तो कुल संख्या 613 हो जाती है। उनके अनुसार, यह संख्या तोरा (बाइबल की प्रारंभिक पाँच पुस्तकों) में मौजूद आज्ञाओं की कुल संख्या को दर्शाती है।

यह ध्यान देने योग्य है कि त्सीतीत का उपयोग एक वास्तविक आज्ञा है और इसे हर किसी को मानना चाहिए। लेकिन 613 आज्ञाओं के साथ इसका यह संबंध पूरी तरह से एक आविष्कार है। यह **प्राचीनों की परंपराओं** में से एक है, जिनका यीशु ने उल्लेख किया और निंदा की थी (देखें मत्ती 15:1-20)। [\[देखें त्सित्सित के उपयोग के विषय में अध्ययन\]](#)

**प्रश्न:** त्सीतीत (डोरियाँ) के 613 संख्या के साथ मेल खाने के लिए इतने सारे आज्ञाएँ कैसे बनाई गईं?

**उत्तर:** बहुत कठिनाई और रचनात्मकता के साथ। उन्होंने सच्ची आज्ञाओं को कई भागों में बाँट दिया ताकि संख्या बढ़ाई जा सके। इसके अलावा, उन्होंने कई ऐसी आज्ञाएँ भी शामिल कीं जो पुजारियों, मंदिर, कृषि, फसल कटाई, पशुपालन, त्योहारों आदि से संबंधित थीं।

**प्रश्न:** तो वे सच्ची आज्ञाएँ कौन-सी हैं जिनका पालन हमें करना चाहिए?

**उत्तर:** दस आज्ञाओं के अलावा, कुछ और भी आज्ञाएँ हैं। ये सभी पालन करने में सरल हैं। इनमें से कुछ विशेष रूप से पुरुषों या महिलाओं के लिए हैं, कुछ समुदाय के लिए, और कुछ विशिष्ट समूहों के लिए, जैसे किसान और पशुपालक।

बहुत-सी आज्ञाएँ मसीहियों पर लागू नहीं होतीं, क्योंकि वे केवल लेवी गोत्र के वंशजों के लिए हैं या वे यरूशलेम के मंदिर से जुड़ी हैं, जो वर्ष 70 ईस्वी में नष्ट हो गया था।

हमें यह समझना चाहिए कि अब, अंत समय में, ईश्वर अपने सभी विश्वासयोग्य बच्चों को बुला रहे हैं कि वे तैयार रहें, क्योंकि किसी भी समय वह हमें इस भ्रष्ट संसार से ले जाएंगे। ईश्वर केवल उन्हीं को ले जाएंगे जो उनके सभी आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करते हैं, बिना किसी अपवाद के।



दस आज्ञाओं के अलावा, कुछ अन्य आज्ञाएँ भी हैं, जिनका पालन करना सभी के लिए सरल है। परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया था कि वे हमें सिखाएं कि प्रभु हमसे क्या अपेक्षा करते हैं।

अपने नेताओं के शिक्षाओं और उदाहरणों का पालन न करें, बल्कि केवल वही मानें जो ईश्वर ने आदेश दिया है। जातियाँ (गैर-यहूदी) ईश्वर की किसी भी आज्ञा से मुक्त नहीं हैं: “सभा के लिए वही नियम होंगे, जो तुम पर लागू होंगे वही विदेशी पर भी लागू होंगे जो तुम्हारे बीच रहता है; यह पीढ़ियों के लिए एक शाश्वत विधि है, जो प्रभु के सामने तुम पर और उस विदेशी पर समान रूप से लागू होगी। वही कानून और वही नियम तुम पर और विदेशी पर लागू होंगे” (गिनती 15:15-16)।

यहाँ “विदेशी निवासी” हर गैर-यहूदी को संदर्भित करता है जो चुने हुए लोगों का हिस्सा बनना चाहता है और उद्धार प्राप्त करना चाहता है। “तुम उस वस्तु की पूजा करते हो जिसे तुम नहीं जानते; हम उसकी पूजा करते हैं जिसे हम जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों से आता है” (यूहन्ना 4:22)।

नीचे वे आज्ञाएँ दी गई हैं, जिन्हें अधिकांश मसीही नजरअंदाज करते हैं, लेकिन यीशु, उनके प्रेरितों और शिष्यों ने इनका पूरी तरह पालन किया। यीशु हमारे आदर्श हैं।

**केवल पुरुषों के लिए आज्ञाएँ:**

- **बाल और दाढ़ी:** (लैव्यव्यवस्था 19:27) [\[मसीही के बाल और दाढ़ी पर अध्ययन देखें\]](#)

- **त्सीतीत:** (गिनती 15:37-39) [[त्सीतीत पर अध्ययन देखें](#)]
- **खतना:** (उत्पत्ति 17:12) [[मसीही और खतना पर अध्ययन देखें](#)]

**महिलाओं के लिए आज्ञा:**

- **मासिक धर्म के दौरान संबंध से परहेज:** (लैव्यव्यवस्था 20:18)

**समुदाय के लिए आज्ञाएँ:**

- **सब्त, सप्ताह के सातवें दिन, विश्राम करना:** (निर्गमन 20:8-11) [[सब्त पर अध्ययन देखें](#)]
- **निषिद्ध खाद्य पदार्थ:** (लैव्यव्यवस्था 11:1-46) [[देखें गैर-अनुद्धार्य पशु के विषय में अध्ययन](#)]

**प्रश्न:** क्या अपनी पत्रियों (एपिसल्स) में पौलुस ने नहीं कहा कि यीशु ने हमारे लिए सभी आज्ञाओं का पालन किया और अपनी मृत्यु से उन्हें रद्द कर दिया?

**उत्तर:** बिल्कुल नहीं। स्वयं पौलुस यह जानकर भयभीत हो जाते कि उनके लेखनों का उपयोग करके चर्चों में पादरी क्या सिखा रहे हैं। ईश्वर ने किसी भी मनुष्य को, पौलुस सहित, अपनी पवित्र और शाश्वत व्यवस्था में एक भी अक्षर बदलने का अधिकार नहीं दिया।

यदि यह सत्य होता, तो नबी और यीशु दोनों स्पष्ट रूप से बताते कि ईश्वर तरसुस के एक व्यक्ति को इस स्तर की अधिकारिता के साथ भेजेगे। लेकिन सच्चाई यह है कि पौलुस का न तो तनाख (पुराना नियम) के नबियों द्वारा और न ही मसीहा द्वारा चार सुसमाचारों में कहीं उल्लेख किया गया है। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात होती, जिस पर ईश्वर चुप नहीं रहते।

नबी केवल तीन मनुष्यों का उल्लेख करते हैं जो नए नियम के काल में प्रकट हुए:

- **यहूदा (भजन संहिता 41:9)**
- **योहन बपतिस्मा देने वाला (यशायाह 40:3)**
- **अरिमथिया के यूसुफ (यशायाह 53:9)**

पौलुस के बारे में कोई संदर्भ नहीं है, क्योंकि वास्तव में उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया जो नबियों या यीशु द्वारा पहले से प्रकट की गई बातों में जोड़े या उनका विरोध करे।

जो मसीही यह समझता है कि पौलुस ने पहले से लिखी गई बातों में कुछ बदला है, उसे अपना दृष्टिकोण नबियों और यीशु के साथ मेल खाने के लिए पुनः विचार करना होगा, न कि इसके विपरीत, जैसा कि अधिकांश लोग करते हैं। यदि यह मेल नहीं खा पाता है, तो उसे अलग रख दें, लेकिन कभी भी किसी मनुष्य के लेखनों पर अपने समझ के भरोसे ईश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना न करें। यह अंतिम न्याय में एक बहाने के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा। न्यायाधीश को कोई यह कहकर नहीं मना जाएगा: **“मैंने तेरी आज्ञाओं की उपेक्षा की क्योंकि मैंने पौलुस का अनुसरण किया।”**

यहाँ वह बात है जो हमें अंत समय के बारे में प्रकट की गई है:

**“संतों का धैर्य यहाँ है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं और यीशु पर विश्वास करते हैं”** (प्रकाशितवाक्य 14:12)।

**प्रश्न:** और पवित्र आत्मा, क्या उसने ईश्वर की व्यवस्था में बदलाव और रद्द करने की प्रेरणा दी?

**उत्तर:** यह सोचना भी ईशानिदा है। **पवित्र आत्मा स्वयं ईश्वर का आत्मा है।** यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा कि पवित्र आत्मा का भेजा जाना हमें उन्हीं बातों की शिक्षा देने और याद दिलाने के लिए था जो उन्होंने पहले ही कही

थी: **“ΕΚΕΙΝΟΣ (वह) υμᾶς (तुम्हें) διδάξει (सिखाएगा) πάντα (सबकुछ) και (और) υπομνησει (याद दिलाएगा) υμᾶς (तुम्हें) πάντα (सबकुछ) α (जो) εἶπον (मैंने कहा) υμῖν (तुमसे)”** (यूहन्ना 14:26)।

कहीं भी यह उल्लेख नहीं है कि पवित्र आत्मा हमें कोई नई शिक्षा देगा जिसे न पुत्र ने और न ही पिता के नबियों ने सिखाया हो। उद्धार की योजना पवित्र शास्त्रों का सबसे महत्वपूर्ण विषय है, और आवश्यक सभी जानकारी पहले ही नबियों और यीशु के माध्यम से दी जा चुकी है: “क्योंकि मैंने अपनी ओर से नहीं कहा; लेकिन पिता, जिसने मुझे भेजा, उसी ने मुझे आदेश [ἐντολή (endoli): आदेश, नियम, आज्ञा] दिया कि मैं क्या कहूँ और कैसे कहूँ। और मैं जानता हूँ कि उसका आदेश [endoli] ही अनन्त जीवन है। इसलिए, जो कुछ मैं कहता हूँ, वही कहता हूँ जैसा पिता ने मुझे आदेश दिया है” (यूहन्ना 12:49-50)।

प्रकाशनों की निरंतरता मसीह में समाप्त हुई। हमें यह पता है क्योंकि, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, मसीहा के बाद किसी मनुष्य को नई प्राथमिक शिक्षाओं के साथ भेजे जाने की कोई भविष्यवाणी नहीं है। पुनरुत्थान के बाद की सभी प्रकाशन केवल अंतिम घटनाओं से संबंधित हैं, और यीशु और समय के अंत के बीच नई शिक्षाओं के ईश्वर से आने के बारे में कुछ भी नहीं है।

ईश्वर की सभी आज्ञाएँ निरंतर और शाश्वत हैं, और हमें इन्हीं के आधार पर न्याय दिया जाएगा। जो पिता को प्रसन्न करता है, उसे पुत्र के पास छुटकारे के लिए भेजा गया। जिसने पिता की आज्ञाओं का पालन नहीं किया, उसने उसे प्रसन्न नहीं किया और उसे पुत्र के पास नहीं भेजा गया। **“इसी कारण मैंने तुमसे कहा कि केवल वही व्यक्ति मेरे पास आ सकता है जिसे पिता लाए”** (यूहन्ना 6:65)।